Quadrant II - Notes

Programme: Bachelor of Arts (Second Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC 103

Paper Title: Hindi Sahitya Ka Aadikal Evam Madhyakal: Parichayatmak Adhyayan
Unit: 03

Module Name: रीतिमुक्त काव्य धारा

Module No: 16
Name of the Presenter: Mr. Akbarali Shaikh

Notes:

रीतिकाल हिंदी साहित्य इतिहास का तीसरा काल है जिसे उत्तर मध्यकाल, अलंकृतकाल, रीतिकाव्य आदि नामों से भी जाना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिकाल का समय 1643 ई. से 1843 ई. तक माना है। रीतिकालीन कवियों और साहित्य को स्पष्ट रूप में दो प्रमुख धाराओं में रखा जा सकता है। रीतिबद्ध और रीतिमुक्त। रीतिबद्ध को लक्षणबद्ध कहा जाता है और रीतिमुक्त को स्वच्छंद काव्य धारा। लेकिन आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने तीसरी धारा का उल्लेख किया है। जिसे रीतिसिद्ध काव्य धारा कहा जाता है। इसके प्रमुख कवि है बिहारी।

रीतिमुक्त शब्द दो शब्दों के योग से बना है- रीति + मुक्त = रीतिमुक्त। रीति का शाब्दिक अर्थ है- काव्य पद्धति, शैली आदि और मुक्त का शाब्दिक अर्थ है- स्वच्छंद, स्वतंत्र इत्यादि। इस तरह से रीतिमुक्त का अर्थ हुआ रीति के बंधन से मुक्त होकर काव्य रचना करना।

रीतिकालीन साहित्य शास्त्रीय बंधनों से जकड़ा हुआ था। इस युग के अधिकांश कवि काव्यशास्त्रीय नियमों पर चलकर काव्य रचना करते थे। क्योंकि राज दरबारों में इसी तरह के साहित्य का सम्मान था। इसीलिए अधिकांश साहित्यकार इसी धारा में बहते दिखाई देते हैं। लेकिन इस युग में कुछ कवि ऐसे भी थे जो साहित्य की बाह्य

रीतियों से मुक्त, अपनी अनुभूति की सच्ची अभिव्यक्ति के धरातल पर विद्रोही थे। ये कवि दरबारों से मुक्त थे। वे तत्कालीन साहित्य को रूढ़िबद्धता और रीति से मुक्त करना चाहते थे, इसलिए वे रीतिमुक्त कहलाए। ये कवि अपने आपको किन्हीं सीमाओं में न बाँध सके और स्वतंत्र मार्ग पर चल पड़े। इस प्रकार रीति के बंधन को स्वीकार न करने वाले रीतिकालीन कवियों को रीतिमुक्त कवि कहा गया और इनके द्वारा निर्मित काव्य को रीतिमुक्त काव्य कहा जाता है।

घनानन्द, आलम, बोधा और ठाकुर रीतिमुक्त काव्य धारा के चार प्रमुख कवि है। इसके अलावा द्विजदेव, लाल, मुरलीधर, गिरधर आदि अन्य कवियों को भी रीतिमुक्त काव्य धारा में देखा जा सकता है।

रीतिमुक्त काव्य धारा की प्रवृत्तियाँ/विशेषताएँ

उदात्त प्रेम का चित्रण

रीतिमुक्त काव्य धारा की पहली और प्रमुख प्रवृत्ति है- उदात्त प्रेम का चित्रण। रीतिबद्ध कवियों का प्रेम चित्रण रसिकता, अश्लील एवं कामुकता से भरपूर है। किंतु रीतिमुक्त कवियों के प्रेम चित्रण में अकृत्रिमता, स्वच्छंदता एवं उदात्तता है। उनका प्रेम वर्णन हृदय की अनुभूति से प्रस्फुटित है अतः उसमें रंचमात्र भी बनावट दिखाई नहीं पड़ती। स्वच्छंद प्रेम का अर्थ यह है कि इन्होंने विशुद्ध सौंदर्यानुभूति प्रेरणा से जाति, धर्म और समाज के बंधनों की अवहेलना करते हुए ऐसी नायिकाओं से प्रेम किया जो अन्य जाति एवं धर्म से संबंधित थी। आलम, बोधा, घनानन्द मूलतः हिन्दू थे, लेकिन उनकी प्रेमिकाएँ मुस्लिम थी। ऐसी स्थिति में इन्हें प्रेम के क्षेत्र में पर्याप्त संघर्ष करना पड़ा। मित्रों के उपहास, सामाजिक बहिष्कार, आश्रयदाताओं के विरोध को भी सहना पड़ा।

रीतिमुक्त कवियों में समर्पण, त्याग, एकनिष्ठता, बलिदान की भावना आदि दिखाई देती है। इनके पास प्रेम की उदात्त अनुभूतियाँ है और उसका इन्होंने उदात्त रूप में चित्रण भी किया है।

विरहानुभूति की मार्मिक व्यंजना

रीतिमुक्त काव्य में विरह वर्णन की प्रधानता है। इन कवियों का विरह वर्णन अत्यंत चित्ताकर्षक एवं मार्मिक बन पड़ा है। रीतिबद्ध कवियों की तरह इन्होंने हवाई कल्पना की उड़ान नहीं भरी। इनके अनुभव के आँसू इनके काव्य में हर जगह विद्यमान है जो पाठक के हृदय को भिगो देता हैं।

रीतिमुक्त कवियों का प्रेम अंतर्मुखी है उसमें प्राणों की तड़प और मन की व्याकुलता है। उनकी विरह वेदना स्वानुभूत है, अकृत्रिम है और उसमें हृदय पक्ष की प्रधानता है। इस प्रेम की एक विशेषता है विषमता। प्रेमिका को प्रेमी की तनिक भी चिंता नहीं है, किंतु निरंतर मिलने वाली इस उपेक्षा से भी सच्चे प्रेमी प्रेम मार्ग का परित्याग नहीं करते। घनानन्द प्रेममार्ग के ऐसे ही धीर पथिक है जो अपनी प्रेमिका सुजान की बेवफाई से रंचमात्र भी विचलित नहीं हुए और जीवन पर्यंत उसे प्रेम करते रहे।

प्रकृति चित्रण

रीतिमुक्त काव्य में उपलब्ध प्रेम चित्रण प्रायः उद्दीपन रूप में है। पवन को दूत बनाकर नायिका उससे अनुरोध करती है कि तू मेरे लिए मेरे प्रिय के चरण रज ला दे, मैं उसे अपनी आँखों में लगाकर विरह व्यथा दूर करूंगी। कोयल की कूक, चातक की पुकार, मेघों की गर्जना आदि विरहिणी के हृदय को छलनी कर देती है। इस प्रकार का प्रकृति चित्रण रीतिमुक्त काव्य में देख सकते हैं।

मुक्तक शैली

सम्पूर्ण रीतिकाल में मुक्तक शैली की प्रधानता रही है, क्योंकि यह शैली उस समय के वातावरण के अनुकूल थी और कवियों ने अपने विषय के अनुरूप भी मुक्तक शैली को प्रमुखता दी। कवित्त और सवैया इनके प्रमुख छंद है। जिसका प्रयोग घनानन्द, बोधा, आलम और ठाकुर के काव्य में हम देखते हैं।

भाषा का प्रयोग

रीतिमुक्त कवियों ने लाक्षणिक भाषा का जैसा प्रयोग किया है वैसा अन्यत्र दिखाई नहीं पड़ता। इन कवियों ने अपने काव्य प्रयोगों द्वारा ब्रजभाषा का गौरव बढ़ाया।

भावानुकूल भाषा प्रयोग से इन कवियों ने भाषा की शक्ति बढ़ाई तथा अपनी भाषा प्रवीणता का परिचय भी दिया। प्रेम के वर्णन की स्वछंद पद्धति अपनाने के कारण रीतिमुक्त कवियों की भाषा और व्यंजना रीतिबद्ध कवियों से भिन्न है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने घनानन्द की भाषा की प्रशंसा करते हुए लिखा है- "इनकी सी विशुद्ध, सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई कवि समर्थ नहीं हुआ।" इन कवियों ने साफ-सुथरी ब्रजभाषा में काव्य रचना की है। इनकी भाषा में सरसता, कोमलता के साथ ही साथ नवीनता भी है। भाषा का परिमार्जन तथा व्यवस्थापन भी रीतिमुक्त धारा के द्वारा माना जा सकता है। इन कवियों की भाषा में उक्ति-वैचित्र्य, लक्षणिकता, लोकोक्तियों और मुहावरों का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि रीतिमुक्त काव्य हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण काव्य धारा है। इन कवियों ने शास्त्रीय परम्पराओं का खंडन कर, स्वतंत्र रूप से काव्य रचना की। रीतिमुक्त कवियों ने प्रेम के उदात्त स्वरूप और अनुभूति को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया।